''त्यागपत्र की नायिका मृणाल का मनोवैज्ञानिक अध्ययन''

*श्री गोपाल शर्मा

'जीवन की व्याख्या है और जीवन का निर्माण समाज से होता है ऐसी स्थिति में यह स्पष्ट हो जाता है कि साहित्य समाज का प्रतिरूप है तथा मानव व्यवहार को अभिव्यक्ति देने का सशक्त माध्यम है । साहित्य और समाज दोनों एक दूसरे से घनिष्ठतः जुड़े रहते है । वह समाज के बिना सांस तो ले सकता है, किन्तु जीवनयापन नहीं कर सकता हैं । कवि बावजूद अपनी संवदनशीलता के, एकान्त क्षणों में रहकर, किसी एकान्त कोने में साहित्य, साधना करता हुआ भी समाज को उपेक्षित नहीं कर पाता है । कवि की कल्पनाएँ सामाजिक जीवन से पुष्ट और प्रेरित होती हैं तथा उन कल्पनाओं को अभिव्यक्ति देने के लिए वह जिन उपकरणों का चयन करता है, वे समाज से ही लिये जाते है । इससे यह स्पष्ट है कि साहित्य समाज का दर्पण है इसके विपरीत यह भी एक तथ्य हे कि समाज भी साहित्य से गति पाता है।

''प्रेमचन्द के पश्चात् हिन्दी उपन्यासों में नवीन प्रवृतियॉ विकसित हुई । ऐसी प्रवृतियों में एक व्यक्तिवादी चेतना भी है । इस चेतना से प्रेरित होकर उपन्यास लिखने वालों में जैनेन्द्र कुमार का नाम सबसे पहले लिखा जाता है।'' जैनेन्द्र के उपन्यासों में पहली बार व्यक्ति के अन्तर्मन में छिपी हुई भावनाओं और उनसे जुड़े हुए गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन हुआ है। ''जैनेन्द्र ने अपने प्रसिद्ध उपन्यास ''त्यागपत्र'' में पात्रों की भीड़ इकट्ठी नहीं की है। उन्होनें कम से कम पात्रों के सहारे उन पात्रों के आन्तरिक संघर्ष को उजागर करते हुए उनके मन की गहन परतों में जो भरा पड़ा है, उसे स्पष्ट करने का प्रयास किया है। त्यागपत्र में मृणाल जो प्रमुख पात्र है। उसको लेखक ने वास्तविक स्वरूप में प्रगट नहीं कर सका, ''जैनेन्द्र ने मृणाल के व्यक्तिगत और चरित्र को लेकर जो आपेक्ष और आपत्तियॉ प्रस्तुत की गयी है, उनका निष्कर्ष यही हं कि यह उपन्यास नैतिकता का विरोधी और अनैतिकता का पक्षधर है । अनैतिकता का पक्षधर होने के कारण ही यह अश्लील भी है ।

''जैनेन्द्र ने मृणाल ने मृणाल के विवाह पूर्व के आचरण को रहस्यात्मक रीति से छिपाकर उसके प्रति हमारी सम्पूर्ण सहानुभूति प्राप्त कर ली है । किन्तु लेखक ने उस मार्ग को नहीं चुना है। सामाजिक दृष्टि से पर–पुरूष से सम्बन्ध एक अपवाद ही है । किन्तु लेखक ने जिस दृष्टि सम्बन्ध में ''मृणाल की जीवन साधना का दर्शन किया है । वह मेरी दृष्टि से जैनेन्द्र नैतिक स्खलन के दोषी रूप में प्रगट हुए। इस उपन्यास में मृणाल ने बचपन में ही अपने माता–पिता के वात्सल्य से वंछित हो गई थी, उसके बाद से ही वह अपने भाई–भाभी के परिवार के साथ रहने लगी, मृणाल के भैया ने उसका लालन पोषण–बड़े प्यार व दुलार से किया, लेकिन भाभी के द्वारा उसे बचपन से ही बड़े कठोर व्यवहार का सामना करना पड़ा, मृणाल अपने भतीजे प्रमोद को बड़े लाड़ प्यार से रखती थी, एक दिन प्रमोद ने देखा कि मॉ ने बुआ की बेंत से पिटाई कर रही थी, इसका आंकलन हम उपन्यास में प्रमोद के निम्न संवादों के माध्यम से देख सकते है ।

''चल, ला, बेंत तो ला ।।''

तब माँ ने चिल्ला कर कहा –

''सुनता नहीं है ? जाकर बेंत ला''

बेंत लेकर मॉ ने किवाड़ बंद कर लिए उसके बाद ही सपासप बेंत से पीटने की आवाज मेरे कानों में पड़ रही थी, थोड़ी देर बाद जब मैंने कोठरी को खोला तो देखता क्या बुआ औंधी पड़ी हुई रो रही थी।

मृणाल दर्द को सहेजती रहती है । उसे समेटती है । वह दर्द को सहती हुई भी सत्य और ज्ञान के मार्ग पर धावित होती है । ''लेकिन इतना बड़ा त्याग करते हुये भी वह अपनी जिन्दगी में कभी सुख नहीं पाती है ।

उसका अन्त दुःखों में ही हो जाता है । जैनेन्द्र जी ने एक तरफ तो नारी शक्ति को आक्रोश के रूप में तथा क्रान्तिकारी परिवर्तन के रूप में दिखाने की कोशिश की है, तो मृणाल को इसमें इतनी कमजोर व शक्तिहीन नारी के रूप में दर्शाया है क्यों – ? जिसका औचित्य ही नहीं है । वह स्वरूप गलत भी है और इससे पाठक उपन्यास के कथानक से मुखरित हो जाता है ।

''मृणाल अपनी सहेली शीला के भाई के बचपन से प्रेम करती थी, लेकिन वह अपने विवाह तक यह बात किसी को भी नहीं कह पाई, क्यों– (?)'' यहॉ जैनेन्द्र जी की स्वतन्त्र नारी का कोई अस्तित्व ही नहीं रहा, यह उनके लेखन कार्य से विपरीत है । क्योंकि जैनेन्द्र जी ने यहॉ नारी की स्वतन्त्रता को डर व भय से बांध दिया, यदि वे नारी की स्वतन्त्रता के वास्तविक पक्षधर होते तो मृणाल को अपने भाई, व भाभी के सामने अपने साथ को प्रगट करने के लिए खड़ा कर देते । लेकिन मृणाल अपनी भावनाओं का दमन कर देती है क्यों । क्या जैनेन्द्र जी समाज को तोड़ना नहीं चाहते इसलिए इस सामाजिक परम्परा की आड़ में मृणाल का विवाह एक अनमेल रूप में प्रदर्शित होता है। विद्रोह की भावना न होने के कारण ही, एक सामाजिक कुप्रथा का जन्म होता है ।

जैनेन्द्र मृणाल के माध्यम से समाज को तोड़ना नहीं चाहते है लेकिन दूसरी तरफ वह परिवार को तोड़ देते हे। मृणाल के विवाह के कुछ समय बाद वह अपने पति को अपने प्रेम के बारे में बताती है तो उसके पति द्वारा उस पर गलत

एम.ए. पूर्वार्द्ध, एस.एस.जी. पारीक, पी.जी. महाविद्यालय, जयपुर

आरोप लगाकर अपने घर से निकाल देते है । मृणाल अपने भतीजे से मिलती है तो इस घटना क्रम को सुनाती है । जिससे प्रमोद समाज व परिवार के नियमों से क्रोधित हो उठता है । इस उपन्यास में मृणाल को हमेशा कमजोर बताया है जो कि भारतीय नारी के लक्षणों के विपरीत है। भारतीय नारी वीर व साहसी है, लेकिन इनकी जगह यहॉ उसके ममत्व, दया व त्याग को सम्पूर्ण आधार बनाकर अंहिसा रूपी प्रेम को प्रदर्शित किया है । उपन्यास को पढ़ने पर पाठक के मन उसके प्रति समीक्षा करने के भाव पैदा हो जाते है । उसके मन में सकारात्मक तथा नकारात्मक विचार उठते है। उपन्यास के अध्ययन से हमें शिक्षा भी ग्रहण होती है। प्रकृति परिवर्तनशील है । मानव जाति भी परिवर्तन चाहती है लेकिन यहॉ मृणाल को जेनेन्द्र जी ने परिवर्तन के परिपेक्ष से दूर रखा है । वह अपनी भावनाओं के कारण विधान से संघर्ष करती है । वह सामाजिक मर्यादाओं और परम्पराओं को विकृत करने में विश्वास नहीं करती है । वह समाज को पुष्ट व उन्नत रूप में देखना चाहती है ।

जब जैनेन्द्र जी समाज को भी नहीं तोड़ना चाहते ना ही हमारी सभ्यता व संस्कृति का विद्रोह करवाना चाहते है तो अन्त में मृणाल अपने पति का घर छोड़कर अन्य इन्सान के साथ अपना जीवन जीने की कोशिश करती है। प्रमोद अपने विवाह पर वह अपनी बुआ को वहां से लेने के लिए जाता है तो मृणाल के कुछ कथन निम्न है जो समाज की मर्यादा का निर्वाह करते है । जैनेन्द्र जी के अनुसार

''मैं अपशगुन हूँ, जो भाई शगुन से बनता काम बिगड़ जाता है अब भी मैं सोच रही हूँ कि क्या चली न जाऊॅ ? पर सुन एक बात तुझसे करती हूँ । यहॉ कोई बेवकूफी मत करना, अब आ गया तो आ गया फिर मेरे यहॉ मत आना ! मेरे कुल शील का कुछ पता है।इससे मेरे यहॉ आना–जाना ठीक नहीं है।''

वह एक कोयले वाले के साथ गन्दी बस्ती में रहना शुरू कर देती है । और एक पुत्री को जन्म देती है तो यहॉ हमारी रीति व समाज के नियम नहीं टूटते, वह अपनी खुशी तथा परिस्थति की मार से आश्रय के लिए हमेशा इन्सान को बदलती रहती है । उसका जीवन नीरस बनकर रह जाता है ।

जैनेन्द्र जी ने दोनों पक्षों की पृष्ठ भूमि के आधार पर यह उपन्यास लिखा है जिसके प्रमुख पात्र मृणाल को उन्होनें एक परिवर्तन शील नारी के रूप दिखाया है तो कभी उसे सामाजिक मान्यताओं का पालन करने वाली, कभी वह पूर्ण रूप से स्वतन्त्र दिखाई देती है तो कभी पराधीन, लेकिन उपन्यास में पात्र की इतनी मूंगता दिखाना उचित नहीं है ।

पूर्णरूपेण विवेचन करने पर मेरे दृष्टिकोण में यहॉ मृणाल को स्पष्टवादी प्रवृति के रूप में उभारा जाना चाहिये था, आधुनिक समय के साथ परिवर्तन भी आवश्यक है । मृणाल को विवाह से पूर्ण सारी बातें स्पष्ट कर देतनी चाहिए थी, क्योंकि प्रेम पवित्र होता है । प्रेम में इतनी शक्ति होती है कि वह इन्सान को हरा देता है । प्रेम को कोई नहीं जीत सकता और ना ही उसे भूलाया जा सकता है। मृणाल अपने प्रेम के सामने खड़ी होकर समाज व परिवार की मर्यादा को ध्यान में रखकर उसका विद्रोह न कर, अपनी भावनाओं का दमन करती है तो वह जिन्दगी भर दुःखों का सामना करती हुयी, अपनी अनमोल जिन्दगी का अन्त कर लेती है । यह जिन्दगी को जीने का उचित रूप ना होकर अनुचित रूप है ।

यदि मृणाल अपने दृढ विश्वास से प्रेम को प्राप्त कर लेती तो हमारे समाज में परिवर्तन प्रगट होता, ना ही को स्वतन्तत्रता रूप से आगे बढ़ने का सुअवसर मिलता वर्तमान समय में ऐसा स्वतन्त्र दृष्टिकोण होना अनिवार्य है ।

मृणाल प्रेम को प्राप्त कर लेती तो उसका जीवन इतना नश्वर व दुःखों के क्षणों से भरा न होता और सुखों से भरी जिन्दगी व्यतीत करती ।

समाज में अनमेल विवाह की परम्परा पर रोक लग जाती । इसलिए नारी की स्वतन्तत्रा को समाज में स्थान मिलना चाहिए जिससे हमारे समाज के विकास के साथ–साथ राष्ट्र का विकास भी सम्भव होगा ।

मृणाल समाज व परिवार के लिए अपने जीवन का बलिदान कर देती है लेकिन कठोर समाज का क्रम चलता रहता है । वह व्यक्ति की मूल भावनाओं को कुचलता ही आया है । व्यक्तिगत कुण्ठा हमेशा जीवन का अभिन्न अंग रही है और साहित्य का शाश्वत विषय रहा है। कुण्ठित मृणाल जीवन में हारकर भीतर और की परिस्थितियों से टकराकर जड़ बन जाती है । उस स्थिति से उभरने की क्षमता उसमें नहीं हे । उसकी कुठित भावना विद्रोह का रूप धारण नहीं करती । वह एक भारतीय आदर्श नारी बनना चाहती है । वह आत्म विद्रोह की भावना रखती है । आत्मपीड़न से समाज में कभी भी गति नहीं आती है लेकिन अब समाज बदलने लगा है । पुराने विचारों में परिवर्तन होने लगा है । विकास के लिए परिवर्तन जरूरी है फिर यह नारी के लिए लागू क्यों (?) नहीं है । यहॉ जैनेन्द्र जी ने मृणाल की स्वतन्त्र शक्ति को क्यों छीना है। क्या नारी शक्ति इतनी कमजोर है कि वह किसी का सामना नहीं कर सकती । लेकिन इसके विपरीत यह भी सत्य हे कि नारी शक्ति का महापुंज है ।

त्यागपत्र उपन्यास में एक तरफ जहॉ मृणाल की स्वतन्त्रता की आवश्यकता है वहॉ तो उस पर प्रतिबंध लगा दिये गये और जहॉ स्वतन्त्रता की कोई आवश्यकता नहीं थी, वहॉ उसने समाज के नियमों को एक–एक करके तोड़ती गई है। यहॉ जैनेन्द्र जी स्वतंत्रता को उचित स्थान नहीं दे पायें । मृणाल की शादी शीला के भाई से हो जाती तो समाज की बुराईयॉ और जो विसंगतियॉं बाद में उभर कर आयी है । शायद उनका अन्त हो जाता एवं नारी को अपने स्वतन्त्र अस्तित्व के लिए आधार मिल जाता।